

ये अव्यक्त इशारे

अब अपनी पुरानी नेचर व संस्कारों का परिवर्तन करो

25-11-2022

जब संस्कार धारण करने वाली चैतन्य शक्तिशाली स्वयं आत्मा हैं तो छोड़ना भी आत्मा को है, न कि संस्कार स्वयं छूटेंगे। तो यह जो कहते हो कि मेरे यह संस्कार हैं, स्वभाव है, आदत वा नेचर है। यह आदत बोलती है वा आत्मा बोलती है ? इसलिए मेरी नेचर, मेरे संस्कार कहने के बजाए मालिकपन को धारण करो।

Now transform the old nature and old sanskars.

Since you are yourself a living, powerful soul who imbibes sanskars, then it is also you, the soul who has to let go. The sanskars will not go away by themselves. When you say, "These are my sanskars, nature or habits", is it the habit that is speaking or the soul that is speaking? Therefore, instead of saying, "My nature," or "My sanskars", become a master of yourself.

